नगानी निचार सामान्य हित समूह के लिए कड़ु की खेती पर कार्यशाला एवं हेंड- होल्डिंग पर रिपोर्ट

भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा जाईका जड़ी बूटी सेल, हिमाचल प्रदेश वन विभाग से वित्तपोषित परामर्श परियोजना के तहत कड़ू औषधीय पौधे उगाने, संरक्षण एवं मार्केटिंग हेतु हैंडहोल्डिंग एवं कौशल विकास विषय पर निगानी एवं निचार के सामान्य हित समूह के सदस्यों, निचार क्षेत्र का फील्ड स्टाफ एवं स्थानीय महिला समूहों के लिए प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन निचार में 18 -19 जून, 2026 को किया, जिसमें पहले दिन 55 लोगों ने भाग लिया तथा दूसरे दिन फील्ड प्रदर्शन में सामान्य हित समूह ने भाग लिया । डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान, प्रशिक्षण समन्वयक एवं परामर्श परियोजना अन्वेषक ने कहा कि इसका उद्देश्य सामान्य हितधारक समूहों को कड़ू को उगाने के बारे में हैंड-होल्डलिंग स्पोर्ट एवं कौशल विकास करना है । उन्होनें कहा कि सामान्य हितधारक समूह के सदस्य जड़ी-बूटी सेल जाइका और हिमालयन वन अनुसंधान के तकनीकी सहयोग से कडु को उगा रहे हैं । इसके अतिरिक्त डॉ. चौहान ने निचार क्षेत्र में उगाने वाले महत्वपूर्ण औषधीय पौधे जैसे कि वन ककड़ी, निहानी, चोरा, कुठ इत्यादि की पहचान, उपयोग और महत्व के बारे में व्यख्यान दिया । मुख्य वक्ता, डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं समूह समन्वयक अनुसंधान ने जड़ी बूटियों के उगाने से संबंधित समस्याओं पर प्रकाश डाला । उन्होंने कहा कि जड़ी बूटियों का उनके प्राकृतिक आवास से अवैज्ञानिक तरीके से दोहन हो रहा है, जिससे बहुत सी जड़ी बूटियां लुप्त होने के कगार पर हैं । उन्होंने कड़ू की खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी । कड़ू के एक पौधे से अधिक पौधे तैयार करने की मैक्रोप्रोलिफरेशन विधि के बारे में अवगत करवाया और इसके लिए उचित प्रकार के खेत अथवा पौधारोपण क्षेत्र चुनने और संभावित दिक्कतों से निदान पाने हेतु प्रमुख सावधानियां सुझाई । इसके अतिरिक्त निहानी, चोरा, वन ककड़ी एवं पतीश को उगाने की विधि की संक्षिप्त जानकारी दी । डॉ. रणजीत कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने किन्नौर जिले की जैव विविधता के बारे में प्रस्तुति दी । श्री सी. एम. शर्मा, सेवानिवृत वन मंडल अधिकारी एवं सलाहकार जायका ने कहा कि जाइका जड़ी-बूटी सेल किसानों के साथ सहयोग के लिए सदैव तत्पर है । इसके अतिरिक्त डॉ शर्मा ने औषधीय पौधों के विपणन के बारे में जानकारी दी । उन्होने कहा कि जड़ी बूटी सेल जायका कुटकी की मार्केटिंग के लिए समिति या फार्मर प्रोड्यूसर ग्रुप का गठन करेगी ताकि मार्केटिंग से संबंधित बाधाओं को दूर किया जा सके । जायका मार्केटिंग के लिए विभिन्न संस्थाओं, फार्मा कंपनियों जैसे डाबर व अन्य आदि को जड़ी बूटी आधारित उद्योगों से मार्केटिंग संपर्क साधने में समिति की हेल्प करेगी ।

दूसरे दिन 19 जून,2026 को निगानी एवं निचार के सामान्य हित समूह के सदस्यों का छोत कंडा निचार का फील्ड दौरा करवाया गया, जहां पर उन्हे कड़ु को उगाने के बारे मे हेंड होल्डिंग दी गई और प्रेक्टिकल तौर पर कड़ु की मेक्रो प्लोलीफ़िरेशन तकनीक की जानकारी दी गई तथा कड़ु को उगाने में आ रही दिक्कतों के निवारण हेतु सुझाव दिये गए ।

प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम
कडू की खेती और संरक्षण के लिए हैन्डहोल्डिंग सपोर्ट,
कौशल विकास एवं मार्केटिंग
भा. वा. अ. शि. प. - हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

कड़ू की खेती और संरक्षण से आजीविका संवर्धन पर मंथन

दिव्य हिमाचल ब्यूरो–रिकांगपिओ

जिला किन्नौर के निचार वन परिक्षेत्र में कड़ू औषधीय पौधे की खेती, संरक्षण और विपणन के माध्यम से आजीविका सुधार विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (एचएफआरआई) शिमला द्वारा जाईका जड़ी–बूटी सेल, हिमाचल प्रदेश वन विभाग के वित्तपोषण से संचालित परामर्श परियोजना के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में निगानी और निचार के सामान्य हित समूहों के सदस्य, वन विभाग का फील्ड स्टाफ तथा स्थानीय महिला समूहों सहित 55 लोगों ने भाग लिया। प्रशिक्षण समन्वयक एवं परियोजना अन्वेषक डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य हितधारक समूहों को कड़ू की वैज्ञानिक खेती के लिए हैंडहोल्डिंग सहायता और कौशल विकास प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि जाईका वानिकी परियोजना और हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के तकनीकी सहयोग से क्षेत्र के किसान कड़ू की खेती कर रहे हैं। प्रतिभागियों को फील्ड भ्रमण के माध्यम से कड़ू उत्पादन से जुड़ी तकनीकों और समस्याओं के समाधान संबंधी जानकारी भी दी जाएगी। डॉ. चौहान ने क्षेत्र में पाए जाने वाले महत्वपूर्ण औषधीय पौधों जैसे वन ककड़ी, निहानी, चोरा और कुठ की पहचान, उपयोगिता और महत्व पर भी व्याख्यान दिया। मिशन लाइफ के तहत ऊर्जा संरक्षण और एकल–उपयोग प्लास्टिक से बचाव का संदेश दिया। मुख्य वक्ता एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. संदीप शर्मा ने जड़ी–बूटियों के संरक्षण की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि प्राकृतिक आवासों से इनके अवैज्ञानिक दोहन के कारण कई महत्वपूर्ण प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर पहुंच रही हैं। उन्होंने कड़ू की खेती, संरक्षण और इसके आर्थिक महत्व पर विस्तृत जानकारी प्रदान की।

दैनिक भास्कर
शिमला भास्कर 19-06-2026

किन्नौर में आजीविका सुधार पर किया मंथन

भास्कर न्यूज़ | रिकांगपिओ

जिला किन्नौर में कड्डू की खेती और संरक्षण से आजीविका सुधार पर मंथन हुआ। वीरवार को वन मंडल किन्नौर के अंतर्गत वन परिक्षेत्र निचार में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा जाईका जड़ी बूटी सेल हिमाचल प्रदेश वन विभाग से वित्तपोषित परामर्श परियोजना के तहत कड्डू औषधीय पौधे उगाने, संरक्षण एवं मार्केटिंग हेतु हैंडहोल्डिंग एवं कौशल विकास विषय पर निगानी एवं निचार के सामान्य हित समूह के सदस्यों, निचार क्षेत्र का फील्ड स्टाफ एवं स्थानीय महिला समूहों कें 55 लोगों ने भाग लिया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के प्रशिक्षण समन्वयक एवं परामर्श परियोजना अन्वेषक डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान ने कहा कि इसका उद्देश्य सामान्य हितधारक समूहों को कड्डू को उगाने के बारे में हैंड होल्डलिंग स्पोर्ट एवं कौशल विकास करना है। सामान्य हितधारक समूह के सदस्य जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ जाइका वानिकी परियोजना और हिमालयन वन अनुसंधान के तकनीकी सहयोग से कड्डु को उगा रहे है।

Report on the Workshop and Hand-holding for Karu Cultivation for the Common Interest Group of Nagani, Nichar

ICFRE-Himalayan Forest Research Institute, Shimla, organized a training and demonstration program at Nichar on June 18–19, 2026 funded by the JICA Medicinal Plants Cell of the Himachal Pradesh Forest Department, the program focused on hand-holding and skill development for the cultivation, conservation, and marketing of the Karu medicinal plant. Participants included members of Common Interest Groups from Nigani and Nichar, field staff of Himachal Pradesh Forest Department from the Nichar area, and local women's groups; About 55 people attended on the first day, while Common Interest Group members also participated in the field demonstration on the second day.

Dr. Joginder Singh Chauhan, Training Coordinator and Consultancy Project Investigator, stated that the objective is to provide hand-holding support and skill development to common interest groups regarding the cultivation of Karu. He mentioned that members of these groups are cultivating Karu with technical assistance from the JICA Medicinal Plants Cell and the ICFRE-Himalayan Forest Research Institute, Shimla. Additionally, Dr. Chauhan delivered a lecture on the identification, uses, and significance of important medicinal plants grown in the Nichar region, such as Van Kakdi, Nihani, Chora, and Kuth.

The keynote speaker, Dr. Sandeep Sharma (Senior Scientist and Group Coordinator, Research), highlighted the issues associated with the cultivation of medicinal herbs. He noted that the unscientific exploitation of these herbs from their natural habitats has brought many species to the verge of extinction. He provided detailed information on the cultivation of Karu, explaining the 'macro-proliferation' method for propagating multiple plants from a single Karu plant; he also offered advice on selecting suitable cultivation sites and suggested key precautions to address potential challenges. Additionally, he briefly outlined the cultivation methods for Nihani, Chora, Van Kakdi, and Patish.

Dr. Ranjeet Kumar, Senior Scientist, gave a presentation on the biodiversity of Kinnaur district.

Shri C.M. Sharma, retired Divisional Forest Officer and JICA Consultant, stated that the JICA Medicinal Herb Cell is always ready to collaborate with farmers. Additionally, Dr. Sharma provided information regarding the marketing of medicinal plants. He mentioned that the JICA Medicinal Herb Cell would facilitate the formation of committees or Farmer Producer Groups for the marketing of Karu (Kutki) to overcome marketing-related hurdles. The Cell will assist these committees in establishing marketing linkages with various entities—such as pharmaceutical companies like Dabur and other herb-based industries—to ensure effective marketing.

On, June 19, 2026, members of the Common Interest Groups from Nigani and Nichar were taken on a field visit to Chhot Kanda, Nichar. There, they received hands-on training

regarding Karu cultivation, practical demonstrations of the Karu macro-proliferation technique, and suggestions for resolving challenges associated with its cultivation.

प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम
कड़ू की खेती और संरक्षण के लिए हैंडहोल्डिंग सपोर्ट,
कौशल विकास एवं मार्केटिंग

कडू की खेती और संरक्षण से आजीविका संवर्धन पर मंथन

दिव्य हिमाचल ब्यूरो–रिकांगपिओ

जिला किन्नौर के निचार वन परिक्षेत्र में कडू औषधीय पौधे की खेती, संरक्षण और विपणन के माध्यम से आजीविका सुधार विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (एचएफआरआई) शिमला द्वारा जाईका जड़ी–बूटी सेल, हिमाचल प्रदेश वन विभाग के वित्तपोषण से संचालित परामर्श परियोजना के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में निगानी और निचार के सामान्य हित समूहों के सदस्य, वन विभाग का फील्ड स्टाफ तथा स्थानीय महिला समूहों सहित 55 लोगों ने भाग लिया। प्रशिक्षण समन्वयक एवं परियोजना अन्वेषक डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य हितधारक समूहों को कडू की वैज्ञानिक खेती के लिए हैंडहोल्डिंग सहायता और कौशल विकास प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि जाईका वानिकी परियोजना और हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के तकनीकी सहयोग से क्षेत्र के किसान कडू की खेती कर रहे हैं। प्रतिभागियों को फील्ड भ्रमण के माध्यम से कडू उत्पादन से जुड़ी तकनीकों और समस्याओं के समाधान संबंधी जानकारी भी दी जाएगी। डॉ. चौहान ने क्षेत्र में पाए जाने वाले महत्वपूर्ण औषधीय पौधों जैसे वन ककड़ी, निहानी, चोरा और कुठ की पहचान, उपयोगिता और महत्व पर भी व्याख्यान दिया। मिशन लाइफ के तहत ऊर्जा संरक्षण और एकल–उपयोग प्लास्टिक से बचाव का संदेश दिया। मुख्य वक्ता एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. संदीप शर्मा ने जड़ी–बूटियों के संरक्षण की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि प्राकृतिक आवासों से इनके अवैज्ञानिक दोहन के कारण कई महत्वपूर्ण प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर पहुंच रही हैं। उन्होंने कडू की खेती, संरक्षण और इसके आर्थिक महत्व पर विस्तृत जानकारी प्रदान की।

दैनिक भास्कर शिमला भास्कर 19-06-2026

किन्नौर में आजीविका सुधार पर किया मंथन

भास्कर न्यूज़ | रिकांगपिओ

जिला किन्नौर में कडू की खेती और संरक्षण से आजीविका सुधार पर मंथन हुआ। वीरवार को वन मंडल किन्नौर के अंतर्गत वन परिक्षेत्र निचार में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा जाईका जड़ी बूटी सेल हिमाचल प्रदेश वन विभाग से वित्तपोषित परामर्श परियोजना के तहत कडू औषधीय पौधे उगाने, संरक्षण एवं मार्केटिंग हेतु हैंडहोल्डिंग एवं कौशल विकास विषय पर निगानी एवं निचार के सामान्य हित समूह के सदस्यों, निचार क्षेत्र का फील्ड स्टाफ एवं स्थानीय महिला समूहों के 55 लोगों ने भाग लिया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के प्रशिक्षण समन्वयक एवं परामर्श परियोजना अन्वेषक डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान ने कहा कि इसका उद्देश्य सामान्य हितधारक समूहों को कडू को उगाने के बारे में हैंड होल्डलिंग स्पोर्ट एवं कौशल विकास करना है। सामान्य हितधारक समूह के सदस्य जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ जाइका वानिकी परियोजना और हिमालयन वन अनुसंधान के तकनीकी सहयोग से कडु को उगा रहे है।

****